शोध संचयन
A Refereed Research Journal
And a complete Periodical dedicated to
Humanities & Social Science Research
ISSN 0975 1254 (PRINT)
ISSN 2249-9180 (ONLINE)
www.shodh.net
Vol. 8
Issue 2
15 July, 2017

उत्तर प्रदेश की लोक कला 'चौक पूरना' का एक अवलोकनात्मक अध्ययन

बीज शब्द :

मांगलिक चिह्न, वेदी, लोककला, चौक पूरनाएँ, धूलिचित्र।

चौक पूरना भारतीय संस्कृति में एक मांगलिक कार्य माना जाता है। उत्तर प्रदेश के हिन्दू परिवारों के लगभग सभी शुभ कार्यों में पूजा का विधान है, और इस पूजा में पूजास्थल पर बनायी जाने वाली वेदी में सूखे आटे के प्रयोग से भूपृष्ठ पर ज्यामितीय आकृतियाँ बनायी जाती हैं। इसे चौक कहते हैं जिस पर देवी-देवताओं और यज्ञवेदी को प्रतिष्ठित किया जाता है। वस्तुत: यह एक प्रकार की लोककला है। इसे लोककला के शब्दों में धूलिचित्र भी कहते हैं। प्रस्तुत शोध आलेख में इस कला के पारम्परिक स्वरूप एवं इसकी शास्त्रीयता की मौलिक ढंग से अन्विक्षा की गयी है।

*****

डॉ० हृदय गुप्ता
सहायक प्राध्यापक, चित्रकला विभाग
डी0ए0वी0 कालेज, कानपुर।

उत्तर प्रदेश की लोक कला 'चौक पूरना' का एक अवलोकनात्मक अध्ययन

भारत के प्रत्येक राज्य में मंगलकारी एवं कल्याणकारी भूमि (फर्श) अलंकरण का विधान प्राचीनकाल से है। यह भूमि अलंकरण अथवा धरा चित्र प्रत्येक शुभ मुहूर्त एवं विशेष अवसर पर बनाये जाते हैं। यह परम्परा विभिन्न राज्यों में लोक संस्कृति की विविधता के कारण अलग-अलग नामों से प्रचलित है। राजस्थान में 'मॉडना' गुजरात में 'रंगोली' व 'साथिया', महाराष्ट्र में 'रंगोली', मध्य प्रदेश में 'सतिया' एवं 'मांडना', उत्तराखण्ड में 'ऐपण' या 'आपना', उत्तर प्रदेश में 'चौक पूरना' एवं 'सांझी', बुन्देलखण्ड में 'उरेन', हिमांचल प्रदेश में 'मान्डना' व 'अदूपना' बिहार में 'अरिपन' या 'अहपन', उड़ीसा में 'झोटी' व 'मुरुजा', पश्चिम बंगाल में 'अल्पना', तमिलनाडु में 'कोलम', कर्नाटक में 'रंगवल्ली', आन्ध्र प्रदेश में 'मुग्गू' (मुग्गुल), केरल में 'कोलम' एवं 'फूल कोलम' आदि भू-लोकांकन प्रसिद्ध हैं। इन सभी भू-चित्रणों में समान रूप से एक लोक मान्यता, इनके अन्तः करण में व्याप्त दिखायी देती है वह यह कि जिन घरों में इनका अंकन होता है, उन घरों में अमंगल का नाश होता है और ईश्वर की कृपा व्याप्त होती है। भूमि चित्रण रचना का सर्वप्रथम 'चित्रसूत्रम' में प्रसंग मिलता है- ''सुर-सुन्दरियों को भुलावा देने के लिए महामुनि ने अति सुगन्धित आम का रस लेकर पृथ्वी पर एक उत्तम स्त्री का चित्र बनाया। चित्र में वह स्त्री लावण्यवती श्रेष्ठ अप्सरा दिखायी पड़ने लगी, जिसे देखकर वे सभी देव- स्त्रियाँ लज्जित हो गई।''[1]

वात्स्यायन रचित 'कामसूत्र' पर की गई टीका पं0 यशोधर की 'जयमंगला' अति महत्वपूर्ण है। वात्स्यायन ने कामसूत्र के तृतीय अध्याय में चौसठ विधाओं (कलाओं) का वर्णन है। इस ग्रन्थ की रचना लगभग ई0पू0 चतुर्थ शताब्दी से ई0पू0 सप्तम शताब्दी के मध्य में माना जाता है। इस ग्रन्थ के तृतीय अध्याय में 64 कलाओं के छठवें नम्बर में 'तण्डुल कुसुमवलि विकारा' यानि ''6. तण्डुल कुसुमवलि विकार कला- इस कला में चावलों से फर्श पर अनेक प्रकार की भक्ति रचना की जाती है, जैसे- चौक पूरना आदि''[2] और नवें नम्बर पर 'मणि भूमिका कर्म' यानि ''9. मणिभूमिका कर्म मणियों के फर्श को सजाने की कला''[3] का उद्धरण आया है।

''उत्तर प्रदेश के भूमि चित्रण में प्रत्येक शुभ अवसरों पर 'चौक पूरना' अनिवार्य है। यह आटे या सूखे रंगों से बनाया जाता है। इसे 'चौक डालना' भी कहते है। चौक पूरना में 'पूरना' शब्द पूर्णता का अपभ्रंश प्रतीत होता है जो 'चौक' अर्थात आंगन या चारों दिशाओं की पूर्णता का भाग प्रकट करता है। यह चौक नित्यवृत नैमित्तिक व्रत-त्योहार तथा सोलह संस्कारों के प्रत्येक चरण पर बनाये जाते हैं। सभी परिवारों में पारम्परिक चौकों को बनाना शुभ माना जाता है। 'चौक' का चित्रांकन बनाने वाली स्त्री की कल्पना शक्ति तथा कलात्मकता का द्योतक होता है।''[4]

'चौक' रचना में लोक-कल्याण की भावना निहित होती है। 'लोक' अर्थात सरल तथा अपरिष्कृत समाज जिसका मूल स्वभाव संस्कारों पर आधारित होता है और जिसके संस्कार दैनिक जीवन के विभिन्न पहलुओं पर आधारित होते हैं। इसी दैनिक जीवन में रचित कला, लोक कला के अन्तर्गत आती है। लोक कला जिसमें ललित कला के सिद्धान्त के अनुरूप कुछ नही होता बल्कि यह रूढ़िगत होती है।

'चौकपूरना' उत्तर भारत विशेष रूप से उत्तर प्रदेश की लोक कला है। यह मंगल कामना से उक्त शुभ अवसरों पर बनायी जाती है। चौक का अंकन प्रायः भूमि पर किया जाता है।

भारत के 29 राज्यों और 7 केन्द्र-शासित राज्यों में उत्तर प्रदेश का स्थान प्रमुख है। ''इस क्षेत्र के अनेक नाम रहे। ईसा से छह शताब्दी पहले भारत के 16 महाजनपद थे जिनमें आठ-काशी, कोशल, मल्ल, चेदि, वत्स, करू, पांचाल और शूरसेन इसी क्षेत्र में थे।''[5] सन् 1950 तक इस प्रदेश को 'संयुक्त प्रांत' के नाम से सम्बोधित किया जाता था। 26 जनवरी 1950 को भारतीय संविधान लागू होने पर इसे 'उत्तर प्रदेश' नाम प्राप्त हुआ। ''उत्तर प्रदेश भारत का सीमान्त प्रदेश हैं इसकी सीमा नेपाल को छूती है। उत्तराखण्ड के गठन के पूर्व इसकी सीमाएं चीन के तिब्बती क्षेत्र को छूती थीं लेकिन अब यह क्षेत्र उत्तराखण्ड में चला गया। प्रदेश के उत्तर में अब नेपाल सीमा के साथ उत्तरांचल की शिवालिक पर्वत श्रेणियां है। पश्चिमी और दक्षिण पश्चिमी सीमा पर हरियाणा, दिल्ली और राजस्थान है तथा दक्षिण में मध्य प्रदेश और पूर्वी सीमा बिहार से लगी हुई है।''[6] यह प्रदेश वर्तमान में

1. राम प्रताप त्रिपाठी शास्त्री, सम्मेलन पत्रिका, कला अंक (1987) (अनुवादकः श्री तारिणीश झा, चित्रसूत्रम), हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग, पृ0-435
2. डॉ0 पारसनाथ द्विवेदी, कामसूत्रम (2004), चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी, पृ0-59
3. डॉ0 पारसनाथ द्विवेदी, कामसूत्रम (2004), चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी, पृ0-59
4. डा0 रूचि गुप्ता, 'चौक पूरना' उत्तर प्रदेश की लोक संस्कृति का स्रोत-एक विवेचन, शोध प्रबन्ध (2005), छत्रपति शाहू जी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर, पृ0-66
5. आशुतोष निरंजन, उत्तर प्रदेश 2015, सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, उत्तर प्रदेश, पृ01
6. आशुतोष निरंजन, उत्तर प्रदेश 2015, सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, उत्तर प्रदेश, पृ-03

75 जिलों में विभक्त है। ''पहले प्रयाग तक फैला हुआ यह पूरा क्षेत्र मध्य देश के नाम से अभिहित हुआ। वर्तमान उत्तर प्रदेश की सीमाएँ भी लगभग वही है। हिन्दू कथा साहित्य में यह देश पवित्र माना जाता है, क्योंकि रामायण और महाभारत में जिन महान व्यक्तियों और देवताओं का वर्णन है वे यहीं थे। यहाँ के निवासी सर्वाधिक सुसंस्कृत आर्य माने जाते थे। उनकी बोल-चाल और उनका व्यवहार आदर्श माना जाता था। वे लोग धार्मिक रीति-रिवाजों के पूरी तरह जानकार थे और बिना किसी त्रुटि के बलि पूजा आदि कर सकते थे।''[7] यह प्रदेश सदैव से धर्म एवं संस्कृति का केन्द्र रहा है और प्राचीन समय से ऋषि मुनियों की तपो भूमि रहा है।

'चौक' अवसर अनुकूल निर्मित की जाती है तथा मनोभावों पर आधारित इनके आकार व मांगलिक चिह्न बनाये जाते हैं। मूलतः इनके आकार त्रिकोण, चतुष्कोण (चतुष्यदल), पंचकोणीय (पंचदल), षष्टकोण (षष्टदल), अष्टकोणीय (अष्टदल), षोडशदल, नौ खण्डीय, कमल आकार, कमल-पत्ती आकार, कमल कली आकार, वृत्त, शंखाकार, पानाकार, फूलाकार एवं कोड़रा आदि होते हैं। ''शुभ कार्यों में हल्दी, सूखे आटे, रोली, गेरू, चूना आदि से त्रिभुजाकार, षट्कोण, आयताकार, गोलाकार चौक पूरी जाती है।''[8] इन वाह्य आकारों के साथ-साथ विभिन्न मांगलिक चिह्न बनाये जाते हैं।

चौक की रचना मान्यता एवं विधि अनुसार प्रायः कुआंरी कन्यायें, विवाहित स्त्रियाँ एवं पुरोहित (कर्मकाण्डी ब्राह्मण) द्वारा की जाती है। प्राचीन काल से घरों को साफ रखने की आवश्यकता और उसकी सजावट की इच्छा ने घर की लक्ष्मी अर्थात गृहणी को इस कार्य को करने की प्रेरणा दी। प्रत्येक घर की गृह-सज्जा नारी की सुघड़ता को दर्शाती है। उसका यह भाव सांस्कृतिक परम्परा का अभिन्न अंग है। किसी भी सांस्कृतिक अवसर पर मंगल कामना सार गर्भित होती है और इस मंगल कामना हेतु सौन्दर्यमयी वातावरण तैयार करना नारी का कर्तव्य होता है। प्रत्येक हिन्दू परिवार में इस प्रकार के मंगलमयी वातावरण को तैयार करने के लिए भूमि एवं भित्ति चित्रांकन आवश्यक तत्व माना जाता है।

चौक पूरने का स्थान आंगन, देहरी, बरोठा, चबूतरा, द्वार, मुख्यद्वार, देवस्थान, संस्कार स्थल, हवन-यज्ञ स्थल, अनुष्ठानिक स्थल, कुण्ड स्थल, पूजन-पाठ स्थल, विवाह स्थल, रस्म-रिवाज स्थल आदि होते हैं। चौक जिस स्थान में पूरी (रखी) जाती है, सर्वप्रथम उस स्थान को धो-पोछकर अथवा गाय के गोबर (गऊलेपन) से लीपकर या गेरू से लीप कर स्वच्छ व शुद्ध किया जाता है। ''इस चौक में बिन्दु, स्वास्तिक, चतुष्कोण, त्रिकोण, पूर्ण कुम्भ, त्रिशूल, आड़ी और खड़ी रेखाओं का प्रयोग किया जाता है। सर्वप्रथम भूमि को साफ करके गोबर या गेरू से लीपा जाता है या कभी-कभी लोग भूमि को पानी से धोकर ऐसे ही चौक पूरते हैं।''[9]

''स्वनुलिप्तावकाशा च निदेशं मधुका शुभा।
सुप्रसन्नाभिगुप्ता च भूमिः स्याच्चित्रकर्माणि।।14।।

चित्रकारी के लिए अच्छी तरह लिपी हुई, विस्तृत, कोमल, पवित्र, प्रसाद युक्त तथा सुरक्षित भूमि उत्तम होती है।[10]

चौक रखने का माध्यम प्रायः जौ अथवा गेंहूँ का आटा, मैदा, हल्दी, रोली, गुलाल (अभ्रक), गेरू, ऐपन (चावल का पीठा जो चावल भिगोकर पीसकर उसमें थोड़ी मात्राओं में हल्दी मिलाकर दूधिया (क्रीम) रंग का द्रव तैयार किया जाता है) एवं अनाज आदि होते हैं। ''चौक केवल उत्तर प्रदेश में ही नही वरन् सम्पूर्ण भारत में इस तरह के चौक पूरने की प्रथा थोड़े बहुत अन्तर के साथ विद्यमान है। प्रस्तुत चौक उत्तर प्रदेश में प्रायः सभी शुभावसरों पर आटे (गेंहूँ, जौ-मैदा) या ऐपन (पिसे हुए चावल), हल्दी, मैदा-हल्दी आदि से भूमि पर घर की महिलाएँ अथवा पुरोहित बनाते हैं। व्रत सम्बन्धी कथा-चित्रों में भी यह चौक प्रचुर मात्रा में चित्रित किया जाता है।''[11] सूखे माध्यम से मुक्तहस्त द्वारा यह अनामिका, मध्यमा, तर्जनी एवं अंगूठे से चुटकी भरकर, बुरक-बुरक कर बनायी जाती है तथा आर्द्र माध्यम ऐपन या गेरू से रूई अथवा कपड़े के टुकड़े से अंगुलियों के सहारे चूआ-चूआ कर बनायी जाती है और अनाज द्वारा मुटठी में भरकर निश्चित प्रतीकों व चिह्नों में भर-भर कर तैयार की जाती है। चौक मूलतः रेखा एवं बिन्दु प्रधान होती है। ''इन चित्रों की रेखाओं में सुधराई और बारीकी की अपेक्षा भावना की प्रधानता होती है। उनमें सादापन और धार्मिक पवित्रता का भाव होता है।''[12] इसका प्रारम्भ केन्द्र बिन्दु से किया जाता है। बिन्दु परब्रह्म का प्रतीक स्वरूप है और इससे सृजन का प्रारम्भ माना जाता है। चौक प्रायः ज्यामितिक प्रधान रूपों में बनायी जाती है परन्तु इनके अलंकरण

7. आशुतोष निरंजन, उत्तर प्रदेश 2015, सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, उत्तर प्रदेश, पृ-09
8. जय प्रकाश राय, डॉ0 योगेन्द्र प्रताप सिंह, उत्तर मध्य क्षेत्र की लोक संस्कृति (1999), प्रकाशन विभाग, सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली, पृ0-55
9. डॉ0 बिमला वर्मा, उत्तर प्रदेश की लोककला (1987), जय श्री प्रकाशन, दिल्ली, पृ0-24 व 25
10. राम प्रताप त्रिपाठी शास्त्री, सम्मेलन पत्रिका, कला अंक, (1987) अनुवादक श्री तारिणीश झा, (चित्र सूत्रम), हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग, पृ0-458
11. डा0 बिमला वर्मा, उत्तर प्रदेश की लोक कला- भूमि और भित्ति अंकरण (1987), जय श्री प्रकाशन, दिल्ली, पृ0-24
12. वाचस्पति गैरोला, भारतीय चित्रकला (1990), चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान, दिल्ली पृ0-248

में आलेखन से युक्त लयात्मक रेखाओं का प्रयोग भी किया जाता है। जहाँ चौक पूरी जाती है वह क्षेत्र चित्र भूमि का रूप ले लेता है।

चौक पूरना में बनाये गये प्रत्येक ज्यामितिक रूपों का अपना-अपना महत्व, मौलिकता तथा विशिष्टता होती है इसमें निर्मित शुभ एवं मांगलिक चिह्नों के गूढ़ अर्थ होते हैं। उत्तर प्रदेश की 'चौक पूरना' का महत्व यहाँ के सामाजिक एवं साँस्कृतिक जीवन का महत्वपूर्ण अंग है जो हिन्दू परिवारों के धार्मिक सरोकार से जुड़ी है। इनका अंकन हिन्दू नव वर्ष सम्वतसर के चैत्र मास से प्रारम्भ हो जाता है। इसे बनाने में क्षेत्रीय रूप से प्राप्त सामग्री एवं रूपों में विविधताएँ दर्शित होना और अंकन में शैलीगत परिवर्तन होना स्वाभाविक दिखायी देता है। चौक कर्तव्यों के प्रति सचेतक की भूमिका में सदैव सक्रिय होने का संदेश देती है व प्रेरित करती है। चौक पूरना उत्तर प्रदेश की सांस्कृतिक विरासत है। विविध लोकाचारों में इनकी विशिष्टता के दर्शन निहित है।

कल्याणकारी चौक,
आटा व हल्दी सत्यनारायणजी की कथा
पं० विजय शास्त्री, सम्पूर्ण उत्तर प्रदेश

वेदी चौक/अनुष्ठान चौक,
हवन कुण्ड, चौकपूरना, आटा, हल्दी एवं रोली
कानपुर, उत्तर प्रदेश

'तीज त्योहार चौक',
संकट चौथ (सकट चौथ), कानपुर
पौष मास
माध्यम– आटा, हल्दी

'मांगलिक चौक' श्रीमती राजेश्वरी गुप्ता
बांगरमऊ, उन्नाव
माध्यम– आटा

संस्कार चौक, आटा, वर्षगांठ
बाराबंकी, उत्तर प्रदेश

व्रत-त्यौहार चौक
चौक पूरना, आटा व हल्दी, भूमि, नवरात्रि के अवसर पर
कानपुर, उत्तर प्रदेश

मंगलकारी 'प्रवेश द्वार' चौक
माध्यम—आटा
द्वारा— दीपिका तिवारी, कानपुर

'ब्रत-त्योहार चौक', जिठवन एकादशी
(देवोत्थानी एकादशी)
द्वारा-प्राची निगम, सीतापुर
माधयम-ऐपन

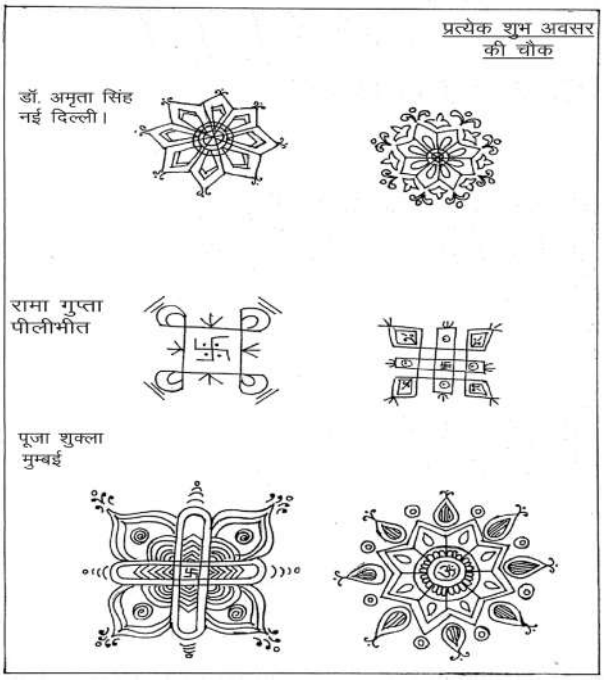

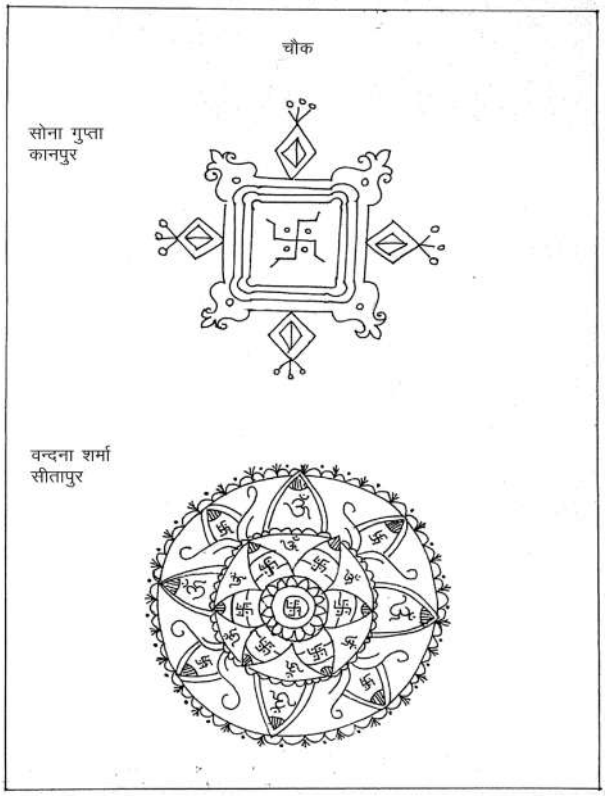
चौक
सोना गुप्ता
कानपुर
वन्दना शर्मा
सीतापुर

◆◆◆